ISSN 3107-8583 www.loksanskruti.in
लोक-संस्कृति
पीयर रिव्यूड बहुविषयक ऑनलाइन ई-पत्रिका

आलेख आमंत्रण

लोक-संस्कृति ई-पत्रिका (त्रैमासिक) के **लोक में खिलौने** विशेषांक हेतु

सम्माननीय,

मानव के बचपन में खिलौनों का एक विशेष स्थान रहा है। शायद ही कोई ऐसा होगा, जिसे अपने बचपन के खिलौने याद न हो। बचपन में कोई भी वस्तु खिलौने का रूप ले लेती थी और कभी तो खिलौना हमारी स्मृति में होता था और खेल बाहर दिखाई देता था। विचार करने पर बचपन, खेल और खिलौने स्वयं में स्वतंत्र विषय न होकर परस्पर अतिक्रमित होते दिखाई देते हैं। यह कहना कठिन है कि खेल के कारण खिलौने निर्मित हुए या खिलौनों के कारण खेल अस्तित्व में आया? कुछ इसी तरह के प्रश्नों और लोक परंपराओं की गहरी परतों में दबे खिलौने से संबंधित सत्य की खोज के विचारोत्तेजक विषय पर लोक संस्कृति ई-पत्रिका का चतुर्थ अंक केन्द्रित है।

त्योहारों, मेलो और उत्सवों में खिलौनों की उपस्थिति प्राचीन काल से रही है। तथ्य बताते हैं कि सिंधु घाटी सभ्यता, हड़प्पा संस्कृति और मोहनजोदड़ो काल से ही खिलौने लोक में विद्यमान रहे हैं और मानव की रचनात्मकता को खिलौनों के विविध रूपों में प्राचीन काल से ही देखा जा सकता है। विभिन्न जलवायु, भौगोलिक संरचना और सांस्कृतिक विविधता के अनुरूप खिलौनों में भी पर्याप्त वैविध्य दिखाई देता है। खिलौने जहाँ मन, मस्तिष्क और तर्क का विकास करते हैं वहीं दूसरी और भावनात्मक अनुभूतियों को भी पोषित और संरक्षित करते हैं। कला, साहित्य और फिल्मों में खिलौनों का पर्याप्त चित्रण हुआ है और इन माध्यमों से भी हम खिलौनों के क्रमिक विकास को समझ सकते हैं। खिलौने के आकार-प्रकार पर भूगोल, संस्कृति, परिवेश और संसाधनों की उपलब्धता जैसे और भी अन्य अनेक कारक, घटक प्रभाव डालते रहे हैं। खिलौनों का व्यापक संसार लोक में बिखरा पड़ा है। आगे इस गहन विषय को छूते हुए कुछ बिंदु सुझाये जा रहे हैं किंतु अध्येता अपने जीवन-अनुभव और दृष्टिसंपन्नता से विषय को नवीनता देते हुए लेख प्रेषित कर सकते हैं।

- रामायण काल, महाभारत काल, वैदिक काल, प्राचीन सभ्यताओं के उत्खनन में प्राप्त खिलौनों का विवरण व महत्व, सिंधु-घाटी, लोथल, कालीबंगा, सिरपुर, तरीघाट, राजीम, मल्हार, पचराही आदि में प्राप्त प्राचीन खिलौनों का विवरण एवं सचित्र जानकारी।
- सर्जक समुदाय-पीढ़ीगत कार्य, जीवकोपार्जन के साधन के रूप में खिलौनों का निर्माण, शिल्पियों की भूमिका।
- जलक्रीड़ा, थलक्रीड़ा, हस्तकंदुक, मिट्टी के खिलौने (कुम्हार), लोहे से बने खिलौने (लोहार), लकड़ी से बने खिलौने (बढ़ई), पत्थर से बने खिलौने (विश्वकर्मा), कपड़े से बने खिलौने (मारूभाट), बनाने की विधि, संवर्धन और पुनर्जीवन, पत्थर, लोहे, लकड़ी, मिट्टी, कपड़े, रुई, सुतली आदि से बने प्राचीन व लोकप्रिय खिलौने।
- बच्चों द्वारा निर्मित खिलौने, खिलौने निर्माण प्रक्रिया, मनोरंजनात्मक व शैक्षिक तथ्य व लोकप्रिय बच्चों द्वारा निर्मित खेलों के नियमों का विवरण।
- खिलौनों की उत्पत्ति कथाएँ, नांदिया बैल, जाता-पोरा, चूल्हा- चक्की, गाड़ी का निर्माण उपयोग आदि का विवरण, विलुप्त हो चुके प्राचीन खिलौनों की पहचान।
- संस्कारों में समाहित खिलौने, वैवाहिक संस्कारों के खिलौनों में बौद्धिक चेतना का महत्व, साहित्य, चित्रों, गीत-गाथाओं, कहानियों, लोकोक्तियाँ, व्रत-त्योहारों, मेलों, अनुष्ठानों और उत्सवों आदि में खिलौने।
- लोक खिलौनों में शैक्षिक और वैज्ञानिक सिद्धांतों का विवरण। जनजातीय क्षेत्र में प्रचलित खिलौने। प्राकृतिक खिलौने, फूल, फल, तने, जड़ और बीज आदि से निर्मित खिलौने, खेलने के नियमों का संकलन।
- प्राचीन खिलौनों की तुलना में आधुनिक खिलौनों में आया विचलन और इनका प्रभाव।

कृपया उपर्युक्त विषयों पर मौलिक और अप्रकाशित होने के प्रमाण-पत्र सहित लगभग 2000 शब्दों में एक आलेख संक्षिप्त परिचय और छायाचित्र सहित दिनांक **01 सितंबर 2026** तक info@loksanskruti.in पर अपेक्षित है।

(डॉ. श्याम सुंदर दुबे)
(9977421629)
अतिथि संपादक

विशेषांक संपादक - डॉ. पीसीलाल यादव (9424113122), रामकुमार वर्मा (8827378469), धनीराम कड़मिया (9755379869), शुभम चौहान (9399783182), डॉ. भारती हाड़ा (9826960543), डॉ. शालिनी गुप्ता (9826209781), डॉ. शिवम शर्मा (7503741828)